## शोध - पत्र / शोध सार

संगोष्ठी के मुख्य विषय एवं उप-विषयों पर आधारित शोध - पत्र आमंत्रित किए जाते हैं। शोध - सार (अधिकतम 300 शब्दों), शोध - लेख (अधिकतम 2500 शब्दों में) दिनांक: 26 नवंबर 2026 तक अनिवार्य रूप से principal.rsdc1968@gmail.com पर प्राप्त हो जाना चाहिए। शोध हिंदी के लिए देवनागरी (मंगल) फॉण्ट में अंकित होने चाहिए।

## पंजीकरण शुल्क

| | |
|---|---|
| शिक्षक | – 500=00 |
| शोधार्थी | – 300=00 |
| छात्र / छात्राएं | – 100=00 |

## ऑन-लाइन रजिस्ट्रेशन लिंक

https://forms.gle/21fTB2x7uhoUi8Zv6

## भुगतान हेतु QR

RATAN SEN DEGREE COLLE

## संरक्षक मंडल

मुख्य संरक्षक
**प्रो० कविता शाह**
कुलपति, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर

संरक्षक
**राजा जय प्रताप सिंह**
माननीय विधायक, बाँसी, सिद्धार्थनगर

प्रबंधक
**रानी वसुंधरा कुमारी**

प्राचार्य
**डॉ० संतोष कुमार सिंह**

संयोजक
**डॉ० आलोक दुबे**
सहायक आचार्य, शिक्षक शिक्षा विभाग
9910597710

सह - संयोजक
**डॉ० संदीप पाण्डेय**
सहायक आचार्य, शिक्षक शिक्षा विभाग
9415217112

सह - संयोजक
**डॉ० अरविन्द त्रिपाठी**
सहायक आचार्य, भूगोल विभाग
7905878160

## परामर्श समिति

प्रो० अर्चना मिश्रा
विभागाध्यक्ष, शिक्षक शिक्षा विभाग

प्रो० शरीफुद्दीन
विभागाध्यक्ष उर्दू विभाग

प्रो० किरन देवी
विभागाध्यक्ष संस्कृत विभाग

श्री ब्रह्म सिंह
विभागाध्यक्ष भूगोल विभाग

कैप्टन डॉ० राजेश कुमार यादव
एनसीसी एवं सहायक आचार्य, भूगोल विभाग

## छात्र समिति

अभिषेक रावत, बी०एड०
हर्षिता शुक्ला, बी०एड०
प्रशांत ओझा, बी०एड०
प्रियंका द्विवेदी, बी०एड०
खुशी पाण्डेय, बी०एड०

निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल

उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान

ज्ञानान्नास्ति परं किंचित्

रतनसेन डिग्री कॉलेज, बाँसी-सिद्धार्थनगर

**"उत्तर – प्रदेश भाषा संस्थान" इंदिरा नगर, लखनऊ**

— एवं —

**रतन सेन स्नातकोत्तर महाविद्यालय**
**बाँसी, सिद्धार्थनगर**

के संयुक्त तत्वाधान में

## राष्ट्रीय संगोष्ठी

# "बाल साहित्य में हिन्दी लेखन"

**Hybrid mode**

## दिनांक : 27 – 28 नवंबर 2026

तदनुसार शक संवत १९४८ मार्गशीर्ष ६ – ७

## आयोजक

आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (IQAC)
रतन सेन स्नातकोत्तर महाविद्यालय
बाँसी, सिद्धार्थनगर, उत्तर – प्रदेश।

डॉ० आलोक दुबे
संयोजक

डॉ० संतोष कुमार सिंह
प्राचार्य

## उत्तर - प्रदेश भाषा संस्थान

भाषा संस्थान उत्तर प्रदेश सरकार का एक अभिनव उपक्रम है जिसकी स्थापना वर्ष १९९४ में की गई। इसका उद्देश्य भारतीय भाषाओं एवं उनके साहित्य का अभिवर्धन है। प्राचीन काल से भारत बहुभाषी क्षेत्र रहा है। भारत के भाषिक यथार्थ का एक तथ्य यह भी है कि यहाँ भाषाओं से अधिक भाषाओं के नाम हैं। भाषा भिन्न-भिन्न देशकाल में विवर्तित होकर स्वतन्त्र नाम और रूप धारण कर लेती है। भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में अब तक २२ भाषाएँ आ चुकी हैं और कई अब उपस्थिति दर्ज कराने की प्रक्रिया में हैं।

## महाविद्यालय परिचय

महामना पं. मदन मोहन मालवीय की प्रेरणा और शैक्षिक विरासत को आगे बढ़ाते हुए स्वर्गीय राजा पशुपति प्रताप नारायण सिंह ने वर्ष १९६८ में सिद्धार्थनगर में रतन सेन कॉलेज स्थापना की। अपनी स्थापना के ५७वें वर्ष में यह कॉलेज सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु से संबद्ध होकर कला, विज्ञान और शिक्षा संकाय के अंतर्गत बी.ए., बी.एससी., बी.एड. और पीएच.डी. पाठ्यक्रमों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर रहा है। इसके साथ ही इग्नू और उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के जिला अध्ययन केंद्र के रूप में यह पारंपरिक और रोजगारोन्मुखी कोर्स (सर्टिफिकेट, डिप्लोमा और पीजी डिप्लोमा आदि) भी संचालित करता है। योग्य और समर्पित फैकल्टी के माध्यम से कॉलेज का उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है।

## संचार - संपर्क समिति

**डॉ० विकास कुमार सिंह**
सहायक आचार्य, शिक्षक शिक्षा विभाग

**श्री विकास सिंह**
सहायक आचार्य, राजनीतिशास्त्र विभाग

**डॉ० केदारनाथ गुप्ता**
सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग

**डॉ० कंचन यति**
सहायक आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग

**श्रीमती सपना त्रिपाठी**
सहायक आचार्य, हिंदी विभाग

**श्री मनोज कुमार सोनकर**
सहायक आचार्य, बी०एड० विभाग

**डॉ० सुनीता त्रिपाठी**
सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग

**डॉ० राकेश चंद्र त्रिपाठी**
सहायक आचार्य, वनस्पति विज्ञान विभाग

**सुश्री सुष्मिता श्रीवास्तव**
सहायक आचार्य, गृह विज्ञान विभाग

**डॉ० रंजीता शुक्ला**
सहायक आचार्य, प्रा० इतिहास विभाग

## 'बाल - साहित्य में हिन्दी लेखन'

बदलते दौर में तकनीक और डिजिटल माध्यमों ने बच्चों की दुनिया पर गहरा असर डाला है। जहाँ एक ओर जानकारी और मनोरंजन के साधन बढ़े हैं, वहीं दूसरी ओर तेज़ डिजिटल सामग्री और छोटे वीडियो के कारण बच्चों में धैर्य, एकाग्रता और पढ़ने की आदत से जुड़ी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं।

ऐसे समय में हिन्दी बाल-साहित्य पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो गया है। कहानियाँ, कविताएँ और चित्रकथाएँ बच्चों को ठहरकर सोचने, कल्पना करने और गहन चिंतन की आदत विकसित करने में मदद करती हैं। यह केवल परंपरा निभाने का माध्यम नहीं है, बल्कि बच्चों को अपनी भाषा, परिवेश और संवेदनाओं से जोड़कर एक संवेदनशील व रचनात्मक समाज बनाने की दिशा में अहम भूमिका निभाता है। इसके लिए हिन्दी बाल-साहित्य को गंभीर विमर्श, नए प्रयोगों और प्रोत्साहन की ज़रूरत है ताकि हर बच्चे तक सार्थक रचनाएँ पहुँच सकें।

## उप-विषय

१. हिंदी बाल साहित्य की ऐतिहासिक विकास यात्रा और प्रमुख रचनाकारों का योगदान।

२. लोककथाओं पंचतंत्र और दादी-नानी की कहानियों की वर्तमान प्रासंगिकता।

३. आधुनिक बाल लेखन में विज्ञान, पर्यावरण, तकनीक और अंतरिक्ष का समावेश।

४. दिव्यांग और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के प्रति संवेदनशील और समावेशी बाल साहित्य।

५. बाल साहित्य की भाषा: सरलता बनाम साहित्यिक गुणवत्ता।

६. बाल पुस्तकों में आकर्षक चित्रांकन, डिज़ाइन और प्रकाशन की भूमिका।

७. अनुवादित बाल साहित्य बनाम मौलिक भारतीय परिवेश का बाल लेखन।

८. डिजिटल युग (मोबाइल गेमिंग और कार्टून) में बच्चों को किताबों से जोड़ने की चुनौतियाँ।

९. हिंदी बाल साहित्य का पुनरुत्थान और भविष्य की राह (ई-बुक्स व ऑडियो बुक्स)।

## तकनीकी / प्रसारण समिति

**डॉ० अरविन्द कुमार मौर्य**
सहायक आचार्य, भूगोल विभाग

**डॉ० अखिलेश कुमार उपाध्याय**
सहायक आचार्य, शिक्षक शिक्षा विभाग

**श्री मनीष कुमार भारती**
सहायक आचार्य, अर्थशास्त्र विभाग

**श्री रविरेश सिंह**
सहायक आचार्य, शिक्षक शिक्षा विभाग

**श्री रवींद्र कुमार टंडन**
सहायक आचार्य, जंतु विज्ञान विभाग

**डॉ० सूर्यकान्त त्रिपाठी**
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग

**डॉ० सुधीर सिंह**
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग

**डॉ० विनोद कुमार यादव**
सहायक आचार्य, गणित विभाग

**श्री आशुतोष नाथ वर्मा**
सहायक आचार्य, रसायन विज्ञान विभाग

**श्री मनोज कुमार**
संगणक सहायक

## पंजीकरण समिति

**डॉ० हंस राज**
सहायक आचार्य, शिक्षक शिक्षा विभाग

**श्री देव राज सिंह**
सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग

**श्री देवेंद्र प्रसाद**
सहायक आचार्य, आंग्ल भाषा विभाग

**श्री दयाशंकर पटेल**
सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग

**श्री रितेश शुक्ल**
सहायक आचार्य, मनोविज्ञान विभाग

**श्री प्रवेश दबे**
सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग

**डॉ० नीलम चौधरी**
वनस्पति विज्ञान विभाग